International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

काकोरी के एक प्र सद्ध शायर, इतिहासकार और लेखक: मुंशी मोहम्मद फैज़ बख्श काकोरवी :

डॉक्टर जुन्नूरैन हैदर अल्वी, अ सस्टेंट प्रोफेसर, फारसी वभाग, मुमताज़ पी जी कॉलेज

डॉक्टर आ मर हुसैन सद्दीकी, अ सस्टेंट प्रोफेसर, अरब कल्चर वभाग, मुमताज़ पी जी कॉलेज

कस्बा काकोरी के उपलब्ध ऐतिहा सक साक्ष्यों से यह बात स्पष्ट है क यहां आबाद खानदानों में सबसे पहला ख़ानवादाह (मूल्ला अबु बकर जामी) म लकजादों का था, जो शर्की शासनकाल में सन **865** हिजरी के बाद जौनपुर से काकोरी आकर बस गए।यह परिवार अपने शजरे के अनुसार अलवी है और इसके पूर्वज "जाम" से प्रवास करके हिंदुस्तान आए। इसी परिवार के एक बहुत योग्य व्यक्ति मुंशी मोहम्मद फैज़ बख्श(**1146** हिजरी से तेरवहीं शताब्दी हिजरी के प्रथमार्ध तक) हैं।(तारीखे काकोरी पृo 24) इन्होंने फारसी, अरबी और उर्दू की शक्षा कस्बे के बड़े बुजुर्गों से प्राप्त की। नौकरी की शुरआत शुजा उददौला बहादुर की सेना में सवारों से की और उसके बाद अपनी योग्यता और शक्षा के आधार पर जनाब मोहतरमा बहु बेगम के दरबार में मीर मुंशी के पद तक पहुंच गए। (सुभ्हे वतन पृo.16.) फारसी भाषा में पारंगत होने के कारण दर्जनों पुस्तकें इतिहास, और शायरी पर लखी। जिसमें से अ धकतर खराब हो गईं। गद्य और पद्य दोनो कलाओं में आप पारंगत थे । सौभाग्य से आज भी मसनवी लेखन,इतिहास लेखन और ग़ज़ल लेखन के बाक़ी बचे नमूने क वता में उनके निपुण होने का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।इसी प्रकार गद्य में इतिहास,वंशावली,और इंशा जैसे वषयों पर कुछ पुस्तकें अपनी कला की श्रेष्ठ उदाहरण हैं।(मशहीरे काकोरी पृo 326.) आपके जीवन या शै क्षक उपलब्धियों के बारे में आज तक जो कुछ लखा गया उस में सबसे अच्छा वर्णन शाह तुरब अली कलंदर ल खत "उसूलुलमकसूद" वा "काशफुल मुतावारी" में देखने को मलता है, इस के अलावा कताब "सुभ्हे वतन" या "तारीखे काकोरी" में भी मुंशी फैज़ बख्श साहेब के हवाले दिखाई पड़ते हैं। मुंशी फैज़ बख्श साहेब के हालात के संबंध में सबसे प्रमुख और वश्वसनीय दस्तावेज उन्हीं की लखी कताब " चश्मे फैज़" और "फरह बख्श" है। यह दोनों कतावें अप्रका शत अर्थात(हस्त ल प के रूप में हैं) इन्हीं कताबों के संदर्भ में "बयाज मोहम्मद अमीर हसन डप्टी कलेक्टर" सन **1915** AD में भी काफी महत्वपूर्ण बातें मुंशी फैज़ बख्श साहेब के संबंध में लखी मलती हैं। पर यह कताब भी बयाज के रूप में " अंवरिया पुस्तकालय" में सुर क्षत है। इसके आलावा हा फज शाह अली हैदर कलंदर ने "मशाहीर काकोरवी" में और जनाब निसार अहमद अल्वी साहेब ने "सुखनवराने काकोरी" में बाकायदा आपके व्यक्तित्व पर वस्तार से लखा है। इसके आलावा फारसी दुनिया के शक्षकों के जो लेख मुंशी फैज़ बख्श साहेब पर लखे गए और मैंने देखे उन में स्वर्गीय शाह अब्दुल सलाम साहेब ने "फरह बख्श" के भाग दो की पांडु ल प को

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संपादित करके अनुवाद के साथ प्रका शत कया, उसके मुकदमे में आप के बारे में लखा है।या श्रीमती प्रोफ़ेसर आसफा जमानी साहेबा वा जनाब प्रोफ़ेसर ऊमर कमाल उद्दीन काकोरवी साहेब ने "तारीखे फरहबख्श" के भाग एक वा दो की पांडु ल प पर जो लेख लखे हैं उन में मुंशी फैज़ बख्श साहेब पर सं क्षप्त जानकारी लखी हैं। आप क्यों क इस लेखक के मां की ओर से पूर्वज हैं और लेखक को जनाब से एक वशेष दिली लगाओ भी है अतःलेखक ने इस लेख के लए उनके व्यक्तित्व का चुनाओ कया है।

जीवन के हालात:

आप काकोरी स्थित अपने खानदानी घर "कोठी तला" में गुलाम सरवर साहब के यहां सन ११६४ में पैदा हुए। आप का पालन पोषण आप के पता जनाब गुलाम सरवर साहब ने कया और अरबी और फारसी की शक्षा आप के चाचा जनाब शेख़ गुलाम मुर्तजा साहब ने दी। इस के बाद आप ने मौलवी हमीदुद्दीन मुहद्दिस से दरसे निजामी (फरंगी महल का पाठ्यक्रम) की कताबें पढ़ी। फर क़ाज़ी उल कुजात मौलवी नजमुद्दीन खान सा कब से पढ़ा। फर मौजा मालखेड़ा में अपने चाचा गुलाम मुर्तजा साहब के साथी शाह मद्दन के यहां रह कर मौलवी मोहम्मद वाजिद खैराबादी और मौलवी मोहम्मद कायम इलाहाबादी से बाकी शक्षा प्राप्त की। इस के अलावा आप ने मुंशी लक्ष्मी नारायण शफीक और मौलवी मोहम्मद असलम पंजाबी से भी शक्षा प्राप्त की। आप बहुत योग्य, बु द्धमान और उच्चकोटि के शायर और लेखक थे। आप अपने समकालीनों और सहपाठियों में सुलेख में सबसे अच्छे थे। जिस के कारण दर्जनों कताबों की नकल की। वैसे तो आपने अरबी और फारसी दोनों भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कया था ले कन अ धकतर फारसी भाषा में ही लखा । अपने पता के जीवन में आप अपने चाचा के पास अ धक रहे जिस के कारण फारसी भाषा में वह बहुत पारंगत हो गए थे। जब क आपने पता स्वयं भी फारसी भाषा में बहुत पारंगत थे और उन्हें इस्लामी और सामान्य इतिहास से बहुत प्रेम था , अतः मारिज उन नबूव्वत, नफहात उल उंस और बुजुर्गों के हालत पर लखी हुई कतावें या तैमूरी बादशाहों के इतिहास का हमेशा अध्ययन करते रहते और उसका बहुत सा भाग आप को जबानी याद भी था। आप की शै क्षक योग्यताओं के कारण काकोरी के बहुत से मुस्लिम और गैर मुस्लिम लोग आप के शष्य थे।मुंशी फ़ैज़ बख्श साहब की शै क्षक रु च प्राकृतिक थी, आप ने आंख खोली तो बड़े बड़े वद्वान् परिवार और देश में मौजूद थे, उन्ही के स्नेह और छत्र छाया में आप पले बढ़े। क वता के प्रति आप का रुझान मसनवी गनीमत पढ़ने के समय से हुआ। जो की उन्होने मुल्ला हमीदुद्दीन मगफूर शक्षा प्राप्त करते समय पढ़ना शुरू की थी। संभवतः आप की आयु उस समय १९ या २० वर्ष रही होगी जिस समय आप फकह हनफी और शरह सुलम आदि की शक्षा प्राप्त कर रहे थे, तब आप अपने परिवार के बुजुर्गों के साथ फैजाबाद चले गए । आप के अनुसार (अनुवाद) "सन ११८३ हिजरी के सफर माह से

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शुजाउद्दौला के शासन के पूरे ६ वर्ष मैने अपनी आंखों से देखे और उनकी मृत्यु के बाद २८ वर्ष जवाहर अली खान की सेवा में गुजारे, और खान साहब की मृत्यु के बाद नवाब नाजिर मोहम्मद दाराब अली खान उनकी स्थान पर सत्तारूढ़ हुए, उन के समय से अब तक अर्थात इस लेख के लखे जाने तक कुल २० वर्ष का समय गुजरा है यहां की सभी प्रत्यक्ष घटनाओं को लख डाला है। " मुंशी फैज बख्श साहब का गहरा संबंध और दोस्ती खानकाह कज मया के पहले बुजुर्ग शाह मोहम्मद काजिम कलंदर से थी, ऐसा की आप दोनो सहपाठी भी थे और साथ ही अबुल बरकात खान के आदेश पर सवारों में नौकरी भी की। "कशफ अल मातवारी" में प्रका शत आप के फारसी खतों से अनुमान लगाया जा सकता है की मुंशी साहब और शाह मोहम्मद काजिम कलंदर के मध्य जितनी एकता, दोस्ती और बेतकल्लुफी थी उतना ही आध्यात्मिक लगाव भी था ।इसका आभास मुंशी साहब के धा र्मक और सांसारिक कामों में जो आंतरिक बातें शाह मोहम्मद काजिम कलंदर ने बताई उनको पढ़कर कया जा सकता है। कशफ अल मातवारी में है " ई बिरादर खूब मी दानियद की दरवतन, मसल तू मारा कसी नीस्त.. बुराई जमीयते जाहिर ओ बातिन शुमा कुसूरी ना ख्वाहम कर्द हर गज़ हर गज़, बल्कि तकलीफ शुमा नीज़ अज़ कस्मत मास्त। (ऐ भाई ! तुम्हे खूब मालूम है की वतन में तुम्हारे जैसा कोई भी नहीं है। तुम्हारी जाहिरी और बातिनी जमीयत के वास्ते हर गज़ हर गज़ कोई कमी नहीं करूंगा। बल्कि तुम्हारी ये तमाम तकालीफ हमारे नसीबे की वजह से हैं।" इसी संबंध के कारण मुंशी फैज बख्श साहब ने एक लंबी मसनवी "बाग़ ओ बहार" के नाम से लखी जो की शाह मोहम्मद काजिम कलंदर की परिस्थितियों और स द्धयों पर आधारित है , इस का अ धकतर भाग हजरत शाह तुराब अली कलंदर ने अपने पता की पुस्तक "उसूल अल मकसूद" में नकल कया है,अतः यदि यह कहा जाए की शाह मोहम्मद काजिम कलंदर के संबंध में सबसे पहला लेख मुंशी फैज बख्श साहब की मसनवी ही है, तो गलत न होगा। यह मानवी पूर्ण रूप से आज तक प्रका शत नहीं हुई, इसका एक अंतिम संस्करण अनवारिया पुस्तकालय में सुर क्षत है। शाह तुराब अली कलंदर इस मसनवी के संबंध में "उसूल अल मकसूद" में लखते हैं : "मखफी मबाद ! क शेख़ फैज बख्श क अज़ याराने ख़ास वा बिरादराने इख्तिसास आन्हजरत आन्द, साबिक अज़ ऐन दर हीन। हयाते आन्हजरत मसनवी मुश्त मल बर अहवाले आन्हजरत गुफ्ता बुदंद वा आन रा बा मुलाहिजा आली हम गुजरानीदा बुदंद, हरचंद आन मसनवी ब कस्मिया क मंजूर खातिर खुदस्त, नीस्त अमा जा बजा दर ऐन कताब अब्याते आन मुना सब मकाम दानिस्ता दा खल करदा एम पस बरजा क दर हाले आन्हजरत इशारा अज़ मसनवी करदा शूद बमाने मसनवी मुराद ख्वाहिश शुद।"(यह छिपा नहीं रहना चाहिए क शेख़ फैज बख्श जो क शाह मोहम्मद काजिम कलंदर के खास दोस्तों और वशेष भाइयों में से हैं। इस से पहले हुज़ूर की जीवन में एक मसनवी हुज़ूर के जीवन पर आधारित कही थी और उसे हुज़ूर को दिखाया भी था, यद्य प वह मसनवी जैसा चहा वैसी नहीं है, ले कन इस कताब में जगह जगह उसके शेर उ चत स्थान

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पर सम्मि लत कर दिए गए हैं, अतः हुज़ूर के जीवन में हर उस जगह जहां मसनवी का संकेत कया जाए वहां यही मसनवी समझी जाए) अजीब संयोग है की आप के फैजाबाद में रहने के समय के हालात, आप की सारी पुस्तकें, शष्यों का ववरण अथवा स्वर्गवास की घटना और मृत्यु के सन के संबंध में सभी नए और पुराने उल्लेख शांत हैं और यहां तक क कसी भी जगह आप की सही स्वर्गवास की ति थ लखी नही मलती। हालां क शाह तुरब अली कलंदर ने अपनी पुस्तक "कशफ अल मतवारी फी हाले निजामुद्दीन कारी" के अंतिम भाग में अर्थात पृष्ठ संख्या १६३ पर मुंशी साहब के जो खत प्रस्तुत कए गए हैं उन के आरं भक भाग से यही पता चलता है क कशफ अल मतवारी लखे जाने के समय अर्थात १२५४ हिजरी में आपका स्वर्गवास हो चुका था, क्यों क शाह तुराब लखते हैं : "दीगर बाइस्म शेख़ फैज बख्श क अज यारान ओ मौत कदाने हजरत वालीदम बुदंद" इस पंक्ति में शब्द "बुदंद" से ये पता चलता है क आप उस समय जी वत न थे, इस के अतिरिक्त लेखक की खोज का परिणाम इस ओर संकेत करता है क मुंशी साहब का स्वर्गवास सन १२५१ हिजरी से पहले हो चुका था। और भगवान जानता है क सही क्या है। अज दरखते आंगबीन शाखी पर अज समरात बूद नाम ओ बोइश दर चमन शहरा वजीह ज़ात बूद एहदतो मुंशी मस्मी गुश्त फैज़ बख्श रा अज जमाले आगही फरखुंदा आदत बूद इल्म ओ दानिश जुस्तुजूइश इत्र बेज़ी खूबेश हम जलीसी बा कलंदर फक्र फख्र असरात बूद रेशा हाईश मुत्त सल अज जाम ता खाके कुकुर अक्ल दरे हैरत नमूद अज करनहा असबात बूद जुन्नुराइन हैदर अलवी

शै क्षक और साहित्यिक उपलब्धियां:

चश्मए फ़ैज़ को पढ़ने से पता चलता है क मुंशी फैज बख्श साहब ने अपने स्वर्गवास से कुछ वर्ष पहले तक सौ से अ धक पुस्तकें लख डाली थीं, जिन में अ धकतर फारसी भाषा में थीं। उन्होंने इंशा, शायरी, इतिहास, अंसाब और कुछ कताबों पर बहुत उपयोगी नोट्स भी लखे थे ले कन दुर्भाग्यवश समय की अनिश्चितता और कुछ अन्य कारणों से चार पुस्तकों के अतिरिक्त कसी अन्य पुस्तक का कोई पता नहीं चलता। पहली कताब मसनवी बाग ओ बहार है जिसका वर्णन ऊपर हो चुका है, दूसरी काकोरी की वंशावली चश्मे फ़ैज़ के नाम से है। मुंशी फ़ैज़ बख्श साहब ने वैसे तो प्रस्तावना या संकलन के कारणों में स्पष्ट रूप से इस पुस्तक का कोई नाम नहीं रखा है, फर भी ये कताब मुंशी फ़ैज़ बख्श साहब द्वारा ल खत नसब नामह के नाम से प्र सद्ध हुई। उस समय के काकोरी के अ धकतर परिवारों के साथ साथ जो लोग अथवा जनता वहां आकर बसी,उन सभी की परिस्थितियों का इस पुस्तक में वस्तृत वर्णन मलता है, पुस्तक के आरंभ में अवध के नवाबों का हाल भी वस्तार से लखा है जिसे दोनों हस्त ल पयों की पुस्तकों ने केवल देख कर नसब नामे वाले भाग को नकल कया है। इसका पूरा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ववरण अमीर हसन साहब ने अपनी पुस्तक में वस्तार से लखा है। इस से यह पुस्तक बहुत व्यापक और वस्तृत हो गई है। ये पुस्तक आज तक प्रका शत नहीं हुई और अप्रका शत रूप में ही उपलब्ध है। इसकी दो प्रतियां खानकाहे काज मया के अनवारिया पुस्तकालय में मौजूद हैं, और एक प्रति संभवतः ए शयाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल में भी है और एक प्रति मुंशी साहब की पीढ़ी की दूसरी शाखा के पास है, जिनमे से कुछ कनाडा और सऊदी अरब में रहते हैं। इस पुस्तक के बारे में डप्टी कलेक्टर जनाब अमीर हसन साहब लखते हैं: "लेखक ने स्पष्ट रूप से एक ऐतिहा सक दिमाग पाया है, क्यों क मजाक के बिना इस तरह के दुर्लभ संग्रह को इक ा करना हर कसी का काम नहीं है। एक इतिहासकार के रूप में लेखक ने प्रत्येक परिवार का वर्णन कया है। लेखक ने बिना भेदभाव के हर एक परिवार जो हाल उसे पता था बिना कस हिच कचाहट के लखा है"

इस कताब के आदाद १२३८ हैं और ऐसा अनुमान है क यही इसके लखने का सन भी है क्यों क इसके आदाद की पुष्टि करने के लए जब लेखक ने "चश्माए फ़ैज़" की पांडु ल प देखी जो क खानकाहे काज मया कलंदरिया त कया शरीफ काकोरी के पुस्तकालय अनवरिया में उपलब्ध है, तो यह स्पष्ट हुआ क कताब के नाम के नीचे दिनांक १२३८ हिजरी लखा हुआ है जो निश्चित रूप से पुस्तक के ऐतिहा सक नाम को साबित करता है। इसी प्रकार "चश्माए फ़ैज़" के आंतरिक भाग से पता चलता है क यह कताब "फरह बख्श" भाग दो के बाद की है जिसे मूल्ला हमीदुद्दीन के पुत्र इमामुद्दीन खान, जिनका स्वर्गवास १८ जमदीउल अव्वल १२३९ हिजरी में हुआ, के हालात के संबंध में मुंशी साहब ने अपनी वंशावली में वर्तमान वर्ष का उल्लेख कया है। वह लखते हैं:

"हर प्रकार की शक्षा प्राप्त करने के बाद, आजी वका खोजने का वचार उत्पन्न हुआ, कुछ समय के लए हकीम ज़ैनुल-आबिदीन खान चकलादार इटावा के साथ रहे, उनके स्वर्गवास के बाद, उन्होंने अल्मास अली खान की कंपनी में सेना में कुछ समय बिताया, और साथ में अध्ययन भी करते रहे , फर इस सरकार (वभाग) को छोड़कर बनारस शहर में एक काजी का पद संभाला। खान की उपा ध से प्र सद्ध हुए, और अब इस लेखन के समय, यानी वर्तमान युग जो क **1234** हिजरी है, न्यायपा लका के मामले में इस प्रांत से जुड़े हुए हैं और वे इस राज्य का काम बड़ी ईमानदारी और वश्वास के साथ कर रहे हैं।"

दुर्भाग्य से, अब कहीं भी लेखक के हाथ से लखी गई कोई पांडु ल प उपलब्ध नहीं है, और खानकाह-ए-काज़ि मया के अनवारिया पुस्तकालय में दोनों पांडु ल पयों को देखकर, यह अनुमान होता है क लेखकों ने, भले ही वे परिवार के रहे हों, अन्य समृद्ध जानकारी और परिस्थितियाँ उपलब्ध कराई हैं, जिन्हें देखकर कोई अंतिम राय स्था पत नहीं की जा सकती है क वर्तमान पुस्तक "चश्माए फैज़" में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सामग्री का कतना प्रतिशत भाग लेखक के द्वारा लखा गया है और बाद में कतना वस्तार कया गया ? कुछ स्थानों पर, भाषा और कथन और समय और स्थान स्पष्ट रूप से इशारा करते हैं क यह बाद में जोड़ी गई सामग्री है। इसी प्रकार मुंशी फ़ैज़ बख्श साहब के पूर्वजों की मालूमात के संबंध में भी उन पर जितना वश्वास कया गया है, वह इस तथ्य के आधार पर भी उ चत नहीं लगता क उन्होंने अपने बड़ों की पुस्तकों और अन्य परंपराओं के आधार पर सभी चीजों की नकल की हैं और उन्हें स्वयं नहीं लखा, जो कसी भी परिवार का इतिहास लखते समय उस समय के लेखक के लए मूल्यवान और प्राथ मक स्रोत होते हैं। इस प्रकार के संदर्भ कई अन्य परिवारों की पुस्तकों में भी पाए जाते हैं। इस पुस्तक "चश्माए फ़ैज़" को आधार बना कर बाद में बहुत सी पुस्तकें और अन्य परिवारों में वंशाव लयां भी लखी गईं जिनका प्राथ मक स्रोत यही पुस्तक है। इस के वपरीत कुछ पुस्तकें इसके वरोध में भी लखी गई हैं, जिस को पढ़ कर मेरी व्यक्तिगत राय यह है क कई जगह मुंशी साहब पर अन्यायपूर्ण आरोप लगाए गए हैं, वो एक पक्षपात रहित इतिहासकार थे , अतः जिसका जो भी अच्छा बुरा मलता गया लखते गए, यहां तक क इस संबंध में जहां उन्होंने अपने सगे भाई या अन्य सगे संबं धयों का वर्णन कया है वहां भी कहीं पक्षपातपूर्ण रवैय्या अथवा अनु चत रूप से समर्थन करने वाला दृष्टिकोण नहीं अपनाया है, अर्थात कहीं भी ऐसा देखने को नहीं मलता क लाभ अथवा संबंध के लए सत्य को छिपा कर झूठ बोला गया हो।ले कन इसमें कोई शक नहीं है क उन्हें अपनी सच्चाई के लए बहुत आलोचनाओं का सामना करना पड़ा। पुस्तक में कुछ स्थानों पर निश्चित रूप से ऐतिहा सक गलतियाँ या कुछ कमजोरियाँ हैं जो इस बात का प्रमाण हैं क सही सामग्री नहीं मल पाई और आप की मृत्यु से पहले जांचने और परखने से रह गई हैं। वैसे देखा जाए तो इस प्रकार की गलतियां समकालीनों की पुस्तकों में भी हैं और यहां तक क जो पुस्तकें वरोध में लखी गई हैं उनमें भी बहुत गलतियां हैं, मगर फर भी इस बात से इंकार नहीं कया जा सकता क मुंशी साहब ने इस पुस्तक के द्वारा जो महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध करा दी हैं वह उन से पहले पुस्तक के रूप में देखने को नहीं मलती। आप की तीसरी उपलब्ध पुस्तक फरह बख्श है। मुंशी साहब की यह पुस्तक भी दो भागों में पांडु ल प के रूप में उपलब्ध है। कुछ जगह इसकी हस्त ल प अनवारिया पुस्तकालय काकोरी में उपलब्ध होने का उल्लेख मलता है जो क लेखक की जानकारी के अनुसार सही नही है। पहला भाग पांडु ल प के रूप में मौलाना आजाद पुस्तकालय अलीगढ़ में सुर क्षत है और दूसरा रज़ा लाइब्रेरी रामपुर में। पहली भाग में दिल्ली के सुलतानों और अवध के नवाबों का वस्तृत वर्णन है और दूसरे भाग में दाराब अली खान के काल की परिस्थितियां उल्लि खत हैं। इस पुस्तक के अंत में पुस्तक लखने का सन ११३४ अं कत मलता है(तारीख फरह बख्श भाग दो, संपादन एवम अनुवाद प्रो० शाह अब्दुस्सलाम पृ० १५८)। इन दोनो भागों के अध्ययन से पता चलता है क इतिहासकार ने अ धकतर उन्ही परिस्थितियों का उल्लेख कया है जो उसने अपनी आंखों से देखे, साथ ही, पहले की घटनाओं के लए प्राथ मक स्रोतों

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

या प्रामा णक कथाकारों के बयानों को शा मल करने का यथासंभव प्रयास कया गया है।भाषा सामान्य है, ले कन वाक्यों की रचना और शैली देशी वक्ताओं की तरह है।आपकी चौथी पुस्तक "रक्कात मुंशी लक्ष्मी नारायण" है जो प्रका शत हो चुकी है और इसकी सामग्री पर कुछ लेख भी लखे गए हैं।लेखक ने संक्षेप में कुछ महत्वपूर्ण बातें कही हैं जो यहाँ उपयुक्त हैं, वैसे लेखक ने हुज़ूर के संबंध में "मुंशी फैज बख्श: एक महान इतिहासकार, लेखक और काकोरी के क व" के शीर्षक के अंतर्गत एक वस्तृत लेख लखा है।हजरत हा फज शाह अली हैदर कलंदर कुद्स ने मुंशी फैज बख्श साहब के बारे में अपनी कताब तजकीराए मशाहीरे काकोरी में लखा है "उनकी और शेख गुलाम हसन सद्दीकी के बीच आपसी मुशायरे हुआ करते थे, इस लए वे खुद लखते हैं क एक दिन शेख गुलाम हसन ने नात में एक शेर कहा:

जागुफ्ते नाते ओ गुश्ता जबानम चू मौजे आबे कौसर दर दहानम उन्होंने इसके जवाब में लखा : चू वसफे ओ नयामद अज़ जबानम अज़ ऐन खजलत निहां शुद दर दहानम यह उस समय क वता में बराबर पत्राचार करते थे, बख्शी अबुल बरकात खान बहादुर को उन्होंने एक खत (क वता में) लखा था...(तजकीरए मशाहीरे काकोरी पृ० ३२६)